अध्याय : 3

हिन्दी ग़ज़ल का ऐतिहासिक विकास

3·1	प्रास्ताविक
3·2	हिन्दी की प्राचीन ग़ज़लें
3·2·1	अमीर खुसरो
3·2·2	महात्मा कबीर
3·2·3	मीरा
3·2·4	प्यारेलाल शोकी
3·2·5	भारतेन्द हरिश्चन्द्र
3·2·6	श्रीधर पाठक
3·2·7	जयशंकर प्रसाद
3·2·8	सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"
3·2·9	रामेश्वर शुक्ल "अंचल"
3·2·10	माखनलाल चतुर्वेदी
3·3	हिन्दी ग़ज़ल का आधुनिक विकास
3·3·1	शमशेर बहादुर सिंह
3·3·2	दुष्यन्तकुमार
3·3·3	निरंकार देव सेवक
3·3·4	सुर्यभानू गुप्त
3·3·5	चंद्रसेन विराट
3·3·6	शेरजंग गर्ग
3·3·7	डॉ·कुँअर बेचैन
3·3·8	डॉ· रोहिताश्व अस्थाना
3·4	निष्कर्ष
3·5	संदर्भ

अध्याय : 3

हिन्दी ग़ज़ल का ऐतिहासिक विकास

3·1 प्रास्ताविक

ग़ज़ल के ऐतिहासिक विकास की ओर नज़र डालते हुए उसके जन्मदाताओं को देखना जरूरी है। उर्दू और फारसी की तरह हिन्दी में ग़ज़ल लिखने की एक सुदीर्घ परम्परा दिखायी देती है। ग़ज़ल का जन्मदाता अमीर खुसरो को माना गया है। वे फारसी के कवि होते हुए भी उन्होंने फारसी-उर्दू और हिन्दी भाषा की जो त्रिवेणी प्रवाहित की है, उससे हिन्दी के समर्थक भी प्रभावित हुए बिना न रह सके।

मूलतः हिन्दी ग़ज़ल की विकास यात्रा अमीर खुसरों से ही आरम्भ हुई है। ग़ज़ल के रंग में रंग जाने का मौका अनेक ग़ज़लकारों को मिला है। आज तक यह सिलसिला जारी रहा है। ग़ज़ल के ऐतिहासिक या क्रमिक विकास की ओर नज़र डालते हुए उनका प्राचीन विकास और आधुनिक विकास देखना जरूरी है। प्राचीन काल के अनेक ग़ज़लकारों ने आधुनिक ग़ज़लकारों को एक नई दिशा दी है। आधुनिक ग़ज़ल का नया रूप हमारे सामने आ गया है।

3·2 हिन्दी की प्राचीन ग़ज़ले

हिन्दी ग़ज़ल का अध्ययन करते हुए यह देखना जरूरी है कि हिन्दी की पहली ग़ज़ल कौनसी है ? और पहले ग़ज़लकार कौन हैं ? प्रामुख्यतः हिन्दी ग़ज़ल का उद्‌भव तेरहवीं शतीं में हुआ। तेरहवीं शती में सूफी संत ख्वाजा मुर्दुनुद्दीन चिश्ती

ने फारसी और हिन्दी में ग़ज़लें लिखी। हिन्दी ग़ज़ल का प्राचीन विकास की ओर नजर डालते हुए अनेक ग़ज़लकारों ने अपना अपना योगदान दिया है। प्राचीन ग़ज़लकार इस प्रकार रहे हैं -

3·2·1 अमीर खुसरो

हिन्दी ग़ज़ल का प्रारम्भकार अमीर खुसरो को माना जाता है। वे फारसी के प्रसिद्ध शायर थे। वास्तव में अमीर खुसरों अपने समय के भारतीय इतिहास की विलक्षण हस्ती थे। वे सूफी थे। वे कवि भी और कोशकार भी थे। खड़ीबोली के विकास में अमीर का महत्वपूर्ण योगदान नहीं है, अमीर खुसरों ने विदेशी शब्दों का हिंदीकरण करके नये शब्दों की संरचना भी की। उदा·उन्होंने अपनी ग़ज़ल में "खत" शब्द का हिंदीकरण करके उसे "खतियाँ" के रूप में प्रयोग किया है। इन्हीं की एक अन्य ग़ज़ल में हिन्दी का रंग और अधिक उभर कर सामने आया है। इसका उदाहरण इसप्रकार रहा है -

"जब यार देखा नैन भर दिल की गई चिंता उतर ।
ऐसा नहीं कोई अजब राखे उसे समझाय कर ।"[1]

खुसरों की हिन्दी के प्रति उदात्त भावना को देखकर इन्हें हिन्दी ग़ज़ल का बीजवपनकर्ता स्वीकार किया है। खुसरों ने अपनी गज़लों के माध्यम से परवर्ती हिन्दी कवियों के लिए ग़ज़ल की टेढ़ी-मेढ़ी पगड्डी प्रशस्त की जिस पर चलकर कालान्तर में वे हिन्दी ग़ज़ल के राजपथ पर पहुँच सके।

अमीर खुसरों की एक और हिन्दी ग़ज़ल उपलब्ध होती है जिसका एक मिसरा हिन्दी में और दूसरा फारसी में दिखायी देता है। इसका उदा·-

"जे हाले मिसकी मकुन तगाफुल, दुराय नैना बनाय बतियाँ
किताबे हिजरों न दारम ऐ जाँ, न लेहु काहे लगाय छातियाँ।"[2]

खुसरो फारसी के कवि होते हुए भी हिन्दी के प्रति उनका अटूट रिश्ता रहा है। उन्होंने आधुनिक हिन्दी ग़ज़लकारों को एक राह दिखाने का बहुत बड़ा दायित्व निभाया है।

3·2·2 महात्मा कबीर

महात्मा कबीर का जीवनकाल 1368 ई·से 1469 ई·तक का रहा है। अमीर खुसरो के बाद महात्मा कबीर का नाम आता है। कबीर निर्गुण भक्तिकाव्य के प्रमुख रहे हैं। वे रहस्यवादी कवि भी रहे हैं। कबीर की ग़ज़ल बोलीभाषा की ग़ज़ल रही है। इसका उदा·-

"हमन है इश्क मस्ताना, हमन को होशियारी क्या,
रहें आजाद या जग से, हमन दुनिया से यारी क्या।"[3]

कबीर ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख प्रवर्तक कवि रहे हैं इसी कारण उनकी ग़ज़ल लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम के दर्शन कराती है। निर्गुण परम्परा की ज्ञानमार्गीय भाषा के कवि होने के कारण ईश्वर प्रेम और गुरुभक्ति का बोलबाला है।

3·2·3 मीरा

मीरा एक कृष्णभक्त कवयित्री है। मीरा के कुछ पदों में ग़ज़ल के छंद का प्रयोग देखने को मिलता है। भक्तिकाव्य में ग़ज़ल का प्रयोग प्रभावी रूप से होता होगा। तभी मीरा का प्रभाव रहा है। इसका उदा·देखिए -

"हो कान्हा, हो कान्हा किन गूँथी जुल्फाँ-कलियाँ-कलियाँ
सुघर कला परवीन हाथ सो, जसुमतिजी ने सवारियाँ-सवारियाँ"[4]

3·2·4 प्यारेलाल शोकी

अमीर खुसरो तथा कबीर की ग़ज़ल को आगे बढ़ाने का कार्य प्यारेलाल शोकी ने किया है। प्यारेलाल शोकी प्रामुख्यतः फारसी के कवि होते हुए भी ग़ज़लों में हिन्दी का प्रयोग दिखायी देता है। वे जहाँगीर के समकालीन कवि रहे हैं।

इनके ग़ज़लों में अलौकिक प्रेम का दर्शन दिखायी देता है। उनकी ग़ज़लें बोलीभाषा की ग़ज़ले रही हैं। इसका उदा·देखिए -

"जिन प्रेम रस चाखा नहीं अमृत पिया तो क्या हुआ
जिन इश्क में सर ना दिया सो जग जिया तो क्या हुआ ?"[5]

उनकी ग़ज़लों में अलौकिक प्रेम दिखायी देता है। इनके ग़ज़लों में थोथी भक्ति का विरोध दिखायी देता है तथा इसके अलावा सच्चे परमेश्वर के दर्शन से जन्म को सफल व सार्थक करने का संदेश दिया है। उनकी ग़ज़लों पर कबीर की भाषा का प्रभाव दिखायी देता है। शिल्प की दृष्टि से भी इनकी ग़ज़लें खरी हैं।

3·2·5 भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु का जीवनकाल 1850 ई·से 1885 ई·तक माना जाता है। भारतेन्दु को आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रवर्तक कहा जाता है। भारतेन्दु ने सर्वप्रथम खड़ीबोली में कविता लिखना शुरू किया। वे "रसा" उपनाम से ग़ज़लें लिखते थे। इनका ग़ज़ल साहित्य "भारतेन्दु ग्रन्थावली भाग-2" में मिलता है। हिन्दी ग़ज़लों का सच्चा सूत्रपात भारतेन्दु से माना जाता है। इसका उदा·देखिए -

"गले मुझको लगा लो ऐ मेरे दिलदार होली में
बुझे दिल की लगी मेरी भी तो ऐ याए होली में।"[6]

भारतेन्दु के ग़ज़लों में प्रेम तथा शृंगार का रंग दिखायी देता है। इनकी ग़ज़लों पर उर्दू शब्दों का असर दिखायी देता है। उनके ग़ज़लों में सामयिकता तथा व्यंग्य के दर्शन भी होते हैं। वे राधा और कृष्ण के उपासक रहे हैं। इनकी कुछ ग़ज़लें विशुद्ध उर्दू भाषा में मिलती हैं। इनकी ग़ज़लों में बीच-बीच में उर्दू के शब्द आ गये हैं। उनकी ग़ज़लों में बृहसम्बन्धी नियमों का सफलतापूर्वक पालन किया गया है।

3·2·6 श्रीधर पाठक

श्रीधर पाठक का जीवनकाल 1860 ई·से 1928 ई·तक का रहा है। इनकी काव्यरचना खड़ीबोली में रही है। इन्होंने भारतेन्दु युगीन ग़ज़लकारों से प्रभावित होकर ग़ज़लें लिखी। इसका उदाहरण -

"कही पै स्वर्गीय कोई बाला सुमंजुवीणा बजा रही है।
सुरों के संगीत की सी कैसी सुरीली गुंजार आ रही है।"[7]

इन्होंने पूर्ववर्ती कवियों से प्रभावित होकर ग़ज़ल शैली में अनेक रचनाएँ की, जिनमें "मजदूरनियों के लिए" तथा "भारत-गीत" उल्लेखनीय हैं।

3·2·7 जयशंकर प्रसाद

जयशंकर प्रसाद का जीवनकाल 1889 से 1937 ई·तक माना गया है। जयशंकर प्रसाद एक प्रतिभा-संपन्न कवि थे। उन्होंने विशुद्ध रूप से हिन्दी में ग़ज़लें लिखी हैं। जयशंकर प्रसाद की हिन्दी ग़ज़ल का यह मतला देखिए -

"विमल इन्दु की विशाल किरणें प्रकाश तेरा बता रही है
अनादि तेरी अनन्त माया जगत् को लीला दिखा रही है।"[8]

सच तो यह है कि प्रसाद ने उर्दू बहर में हिन्दी ग़ज़ल कहने की कोशिश की है। उनके ग़ज़लों में प्रेमभाव के दर्शन भी दिखाई देता है। उनकी ग़ज़लों में भावों की कोमलता के दर्शन होते हैं। उनकी ग़ज़लें "प्रसाद" गुण से भरी हुई हैं। उनमें दार्शनिकता है अनुभूति है और संवेदनशीलता भी। उनके काव्य में हिन्दी की शब्द-सुषमा सर्वत्र विद्यमान है। उनकी ग़ज़लों में उर्दू का एक भी शब्द प्रयुक्त नहीं हुआ है। उनकी अन्य ग़ज़ल में प्रेम के व्रत, नियम और सामाजिक व्यवहार की चर्चा मिलती है। उनकी ग़ज़लों में राष्ट्रीय चेतना के स्वर भी मुखरित हुए हैं।

प्रसादजी की ग़ज़लों में भावना एवं अनुभूति की मृदुता और मानव जीवन के उत्कर्ष का गौरव है। इनकी ग़ज़लों में दार्शनिक और आध्यात्मिक स्वरों का समावेश

भी है। उनकी ग़ज़लों की भाषा पुष्ट और परिमार्जित है।

कुल मिलाकर विशुद्ध हिन्दी में लिखी गयी कवि प्रसाद की ग़ज़लों पर उनके चिंतन, मनन और अनुभूति का पूर्ण प्रभाव परिलक्षित होता है।

3·2·8 सूर्यकान्त त्रिपाठी "निराला"

इनका जीवनकाल 1896 ई·से 1961 तक रहा है। निराला अपने गुणों के कारण सदा निराला रहे। निराला क्रांतिकारी कवि रहे हैं। उनकी जिन्दगी बड़े अज़ीबों गरीब हालात से गुजरी है। इन हालात का जिक्र उनकी रचनाओं में मिलता है। जिस प्रकार छायावाद को उन्होंने उन्नत बनाया उसी प्रकार ग़ज़ल विधा को आगे बढ़ाने का कार्य इन्होंने किया है। वास्तव में "निराला" ने ग़ज़ल को व्यंग्यात्मक स्वर दिया है। "निराला" की "बेला" में करीब-करीब सोलह ग़ज़लें उपलब्ध हैं। उनकी ग़ज़लें सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करनेवाली रही है। निराला समाजवाद के उपासक रहे हैं।

निराला की ग़ज़लें हिन्दी-उर्दू मिश्रित दिखायी देती हैं उनके व्यंग्यप्रधान ग़ज़लों के उदा·-

"किनारा वह हमसे किए जा रहे है।
दिखाने को दर्शन दिए जा रहे है।"[9]

निराला पूँजीपतियों के खिलाफ थे। उन्होंने सामाजिक यथार्थ को प्रधानता दी है। यही उनके व्यंग्य का केंद्रबिंदु रहा है। निराला ने पीड़ा को भी ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त किया है। तीन शेरों से युक्त ग़ज़लें भी निराला ने लिखी हैं।

हिन्दी के साथ-साथ उर्दू शब्दावली प्रधान ग़ज़लें निराला ने लिखी हैं, निराला के ग़ज़ल साहित्य को देखकर ऐसा लगता है कि उन्होंने हिन्दी ग़ज़ल को नये आयामों से सँवारा है।

"निराला"ने अपनी ग़ज़लों में आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, प्रकृति चित्रण एवं व्यंजना को वाणी दी है। उनकी ग़ज़लों में आध्यात्मिक चेतना के स्वर भी मुखरित हुए हैं। उनकी ग़ज़लों में यह दिखायी देता है कि, हिन्दी उर्दू एवं संस्कृत भाषा की त्रिवेणी प्रवाहित हुई है। फारसी के छंदशास्त्र में वर्णित ब्रह्मों के बंधन को भी स्वीकार करते हुए "निराला"जी ने हिन्दी ग़ज़ल को नये भाव और नये तेवर प्रदान किये।

3·2·9 **रामेश्वर शुक्ल "अंचल"**

"अंचल" प्रामुख्यतः प्रेम और सौन्दर्य के कवि रहे हैं। इसका उदा·

"साँस उलटी चल रही है ग़मजदा ईमान की
बस मनाओ खैर उस बीमार के पहचान की।"[10]

छंद की दृष्टि से उनकी ग़ज़लें श्रेष्ठ रही हैं। उनकी ग़ज़लों में उर्दू के सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है। भाषा सरल रही है। उनका ग़ज़ल संग्रह है "इन आवाजों को ठहरा लो"। मिलने की उत्सुकता और बिछुड़ने का दर्द उनकी ग़ज़लों में दिखायी देता है। इनकी ग़ज़लों में नर-नारी का चिरन्तन आकर्षण तथा विरह और मिलन के अनुभूत शब्दचित्र मिलते हैं।

अंचलजी ने बदलते हुए युगबोध को स्वीकार करके अपने कवि धर्म का परिचय दिया है। आधुनिक परिवेश में गिरते हुए नैतिक एवं सामाजिक जीवन मूल्यों की ओर भी कवि की दृष्टि गयी है। यहीं उनके ग़ज़ल के विषय रहे हैं। इसके साथ सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता पर भी इन्होंने बल दिया है। इसके लिए उन्होंने जन-जन को क्रांति की ओर बढ़ने के लिए तत्पर किया है। अंचलजी ने युगद्रष्टा के साथ-साथ युगस्रष्टा के दायित्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। इनकी ग़ज़लों में परिवर्तन के प्रति आस्था के स्वर दिखायी देते हैं। अछूते बिम्ब एवं प्रतीक, अनूठे उपमान तथा सरस रम्य कल्पनाएँ इनकी ग़ज़लों में सर्वत्र विद्यमान हैं।

3·1·10 माखनलाल चतुर्वेदी

माखनलाल चतुर्वेदी का जीवनकाल 1889 से 1968 तक का माना जाता है। माखनलाल चतुर्वेदी पर उर्दू की ग़ज़ल शैली का खूब प्रभाव पड़ा है। अरबी एवं फारसी काव्य की प्रणय पद्धति से ये कवि प्रभावित हैं। इनकी ग़ज़ल का एक शेर देखिए -

"वीराना हो वृन्दावन हो तुमको वनवास नहीं लगता
चढ़ जाएँ चरण पर सहस्त्र बार तुमको पास नहीं लगता"[11]

चतुर्वेदीजी को प्रलय, प्रकृति और प्रणय का कवि कहा गया है। उनकी प्रेमभावना लौकिक ढंग की है। माखनलाल चतुर्वेदी भी अपने प्रिय के कठोर हृदय में दया उत्पन्न करने के लिए बड़े से बड़ा कष्ट उठाने को तत्पर हैं। पं·माखनलाल चतुर्वेदी की ग़ज़लों की भाषा पर उर्दू का प्रभाव स्पष्ट परिलक्षित होता है। कवि ने अपनी रचनाओं में ग़ज़ल शिल्प का पूरा ध्यान रखा है। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से इनकी ग़ज़लों ने आनेवाले कवियों के लिए एक नई दिशा दी है।

इसप्रकार प्राचीन ग़ज़लकारों का ग़ज़ल के लिए योगदान रहा है। आधुनिक ग़ज़लकारों को उन्होंने एक नई दिशा दी है। आधुनिक युग में ग़ज़ल पूरी तरह सदृढ़ दिखाई देती है। इसप्रकार आधुनिक युग में ग़ज़ल की क्या स्थिति रही है यह देखना जरूरी है।

3·3 हिन्दी ग़ज़ल का आधुनिक विकास

आधुनिक युग समस्याओं एवं संघर्ष का युग है। पूँजीवादी सभ्यता तथा प्रदुषित वातावरण में सर्वहारा वर्ग के लिए समाजवाद एक स्वप्न बनकर रह गया है। ऐसी विषम स्थिति में समय की आवश्यकता को जानकर आधुनिक युग के ग़ज़लकारों ने अपनी ग़ज़लों को आम आदमी तक पहुँचा कर इनके दर्द को मुखरित किया है।

हिन्दी ग़ज़ल का आधुनिक विकास अत्यन्त आकर्षक रूप में हुआ है। इस युग में अनेक ग़ज़लकारों ने अपना दायित्व निभाया है। जिन ग़ज़लकारों ने

अपना ग़ज़ल साहित्य में उत्तरदायित्व निभाया है उन ग़ज़लकारों का ग़ज़ल साहित्य देखना जरूरी है। उनकी ग़ज़ल साहित्य का विकास इसप्रकार हुआ है।

3·3·1 शमशेर बहादुर सिंह

हिन्दी ग़ज़ल विकास में शमशेर बहादुर सिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनकी ग़ज़लों में विचारों की नवीनता रही है। उनकी ग़ज़लों में इन्सानी रिश्तों का बहुत सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी चित्रण हुआ है इसका उदा·देखिए -

"मैं यहाँ तक भूल जाया जा सकूँ।
एक आँसू में गिराया जा सकूँ।"[12]

शमशेर मनोवैज्ञानिक यथार्थवादी कवि हैं। उन्होंने संवेदनाओं को अभिव्यक्ति दी है।

शमशेर के ग़ज़ल के कारण ही पाठक के मन ग़ज़ल की दिलचस्पी बढ़ने लगी। दुष्यन्तकुमार पर इनके ही ग़ज़ल का असर दिखायी देता है। उनकी ज्यादातर ग़ज़लें प्रेमभाव को व्यक्त करती हैं। वे अपने आपको असाधारण कवि नहीं मानते। शमशेरके ग़ज़लों में ग़ज़लियत्ता आयी हैं वह ग़ज़लियता और किसी के ग़ज़ल में नहीं पायी जाती।

उर्दू से हिन्दी में आनेवाले पहले ग़ज़लकार शमशेरजी को माना जाता है। इनकी अधिकांश ग़ज़लों में कोमल भावना, मर्मस्पर्शिता, भाषा का प्रवाह एवं छंदशास्त्र का निर्वाह दृष्टिगोचर होता है उनकी ग़ज़लों पर मीरा, गालिब, इक्बालजी का प्रभाव दिखायी देता है। उनकी ग़ज़लों में आम आदमी की पीड़ा दिखायी देती है, परंतु वह पूर्णरूप में नहीं व्यक्त हुई है। उनकी ग़ज़लों में नवीन मानव सम्बन्धों का अत्यन्त सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक एवं यथार्थवादी स्वरूप दृष्टिगोचर होता है। गिरते हुए जीवनमूल्यों का चित्रण उन्होंने प्रतिकों एवं बिम्बों से व्यक्त किये हैं। ग़ज़ल विधा में गागर में सागर भर देने का कार्य इन्होंने किया है। उनकी ग़ज़लों में चाक्षुष बिम्बों का अधिक्य है। उनकी ग़ज़लों की भाषा हिन्दी-उर्दू मिश्रित है।

शमशेर के ग़ज़लों में कुण्ठा, संत्रास, संघर्ष के स्वर मुखरित हुए हैं। उनकी ग़ज़लों में नया प्रवाह, नया तेवर, अभिव्यक्ति का टटकापन तथा पैनापन सभी कुछ मिलता है।

निसंदेह उनकी ग़ज़लें ग़ज़ल साहित्य में मील का पत्थर सिद्ध होगी और औरों को मार्गदर्शन भी करती रहेंगी।

3·3·2 **दुष्यन्तकुमार**

दुष्यन्तकुमार हिन्दी के प्रतिनिधि ग़ज़लकार हैं। उन्होंने व्यक्ति की पीड़ा को लेकर ग़ज़लें लिखी हैं। आज हिन्दी ग़ज़ल को जो नाम है इसके मूल में दुष्यन्तजी की प्रेरणा ही कार्य कर रही है।

"कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक घर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।"[13]

उनका ग़ज़ल संग्रह "साये में धूप है" जिसमें विषयों की विविधता पायी जाती है। उन्होंने ग़ज़ल के द्वारा राजनीति पर भी तीखें प्रहार किये हैं। भाषा की दृष्टि से उनकी ग़ज़लें श्रेष्ठ मानी जाती हैं। उनकी ग़ज़ल का एक-एक शेर एक विचार है। समाज की सच्ची तस्वीर है। दुष्यन्तकुमार ने हिन्दी ग़ज़ल की लोकप्रियता में चार चाँद लगाये हैं। हिन्दी ग़ज़लों में आम आदमी प्रधान रहा है। दुष्यन्तकुमार ने आम आदमी की तकलीफ को अभिव्यक्ति दिलाने के लिए ग़ज़ल का जरिया ही सबसे बेहतर जरिया समझा।

दुष्यन्तकुमार ने इश्क-मोहब्बतवाली ग़ज़लें न कहकर अपनी पीड़ा को ग़ज़लों के द्वारा आम आदमी तक पहुँचाया है। दुष्यन्तकुमार अपनी ग़ज़लों में वास्तविकता से जुड़े नज़र आते हैं। दुष्यन्तकुमार को ग़ज़ल लिखने की प्रेरणा शमशेर से ही मिली। दुष्यन्तकुमार ने परम्परा से चली आयी ग़ज़ल परम्परा को तोड़ कर आम आदमी से ग़ज़ल का रिश्ता जोडा। आम आदमी की तकलीफ को व्यक्त करने का माध्यम ग़ज़ल को बनाया है। उनकी ग़ज़लों में व्यक्त दर्द स्वानुभूत है।

दुष्यन्तकुमार ने अपनी ग़ज़लों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है। दुष्यन्त की ग़ज़लों में जो आग है, वह उस व्यक्ति की आग है जो सामाजिक विसंगतियों को ध्यान से देखकर और समाज के बीच रहकर उसके दर्द को पूरी तरह समझते हुए, भीतर-ही-भीतर सुलग रहा है।

हिन्दी ग़ज़ल को बहुमुखी आयाम प्रदान करने में दुष्यन्तकुमार का योगदान काफी सराहनीय रहा है। हिन्दी के एक सशक्त ग़ज़लकार के रूप में भी दुष्यन्तकुमार बहुचर्चित रहे हैं।

नयी कविता में निहित कृत्रिमता शब्दों की काट-छाँट एवं तराश तथा विचारों की दुरूहता एवं अस्पष्टता और अति बौद्धिकता से ऊबकर उन्होंने अपनी भावभूमि के लिए ग़ज़ल रूपी सरस व समकाल धरातल की खोज की। ग़ज़ल दुष्यन्त में रच-बस गई थी। यही कारण है कि इनकी ग़ज़लों में बाह्य जीवन की अभिव्यक्ति होने पर भी ग़ज़ल का असली रंग फिका नहीं पड़ा है। "वैयक्तिक भावना को सामाजिक चेतना से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य दुष्यन्तजी ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से किया है। उन्होंने भाषा का प्रयोग ठिक किया है। उनकी अधिकांश ग़ज़लें हिंदुस्तानी हैं।"[14]

3·3·3 निरंकारदेव सेवक

निरंकारदेव ने अपने ग़ज़लों में आम आदमी के दर्द को व्यक्त किया है। जिसे अपनी मंजिल का पता नही है उसे सही रास्ता दिखाने का कार्य ग़ज़लों के माध्यम से इन्होंने किया है। आज आदमी ही आदमी का दुश्मन बन गया है आदमी के खून का प्यासा बना है। इसका उदा·देखिए -

"सड़कों पर बदहवास चले जा रहे हैं लोग।
मंजिल का कुछ पता न कहीं पा रहे हैं लोग।"[15]

निरंकारदेव ने दुष्यन्तकुमार से प्रभावित होकर ग़ज़लें लिखी। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से उनकी ग़ज़लें अलग रही हैं। उनकी ग़ज़लों का माध्यम सर्वहारा वर्ग रहा है।

सामाजिक एवं नैतिक जीवन मूल्यों का जब विघटन हो रहा था तब सेवकजी ने दुष्यन्तजी के स्वर में अपने स्वर मिलाये हैं। इसका अनौखा रंग सामने आ गया। उन्होंने अपने ग़ज़लों के माध्यम से शैतान भी आदमी को देखकर भयभीत हो जाता है यह व्यक्त किया है। कथा और शिल्प की दृष्टि उनकी ग़ज़लें दुष्यन्तकुमार का अनुसरण करती है तथा इन्होंने सहज स्वाभाविक हिन्दुस्तानी भाषा का प्रयोग किया है। उर्दू के कई शब्द इनकी भाषा में आये है, मुहावरों के प्रयोग भी इन्होंने ग़ज़लों की अर्थवत्ता के लिए किये हैं।

इसप्रकार आधुनिक ग़ज़ल को आगे बढ़ाने में या उनकी अभिवृद्धि के लिए निरंकारदेव ने योगदान दिया है।

3·3·4 सुर्यभानू गुप्त

सुर्यभानू गुप्त दुष्यन्तकुमार के समकालीन रहे हैं। इनकी अधिकतर ग़ज़लें हिन्दी की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। उनकी ग़ज़लों में अनुभूति की प्रधानता रही है। आम आदमी उनकी ग़ज़ल की बुनियाद रही है। इसका उदा·-

"खून दे दे के भरना पडता है।
दर्द खाली गिलास होते हैं।
आओ गम को लिबास पहना दे,
लफ्ज गम का लिबास होते हैं।"[16]

आधुनिक यथार्थ का चित्र अपने ग़ज़लों में उतारा है। उनकी ग़ज़लों पर उर्दू भाषा का प्रभाव दिखायी देता है। बीच-बीच में अंग्रेजी शब्द भी आये हैं। साधारण बोलचाल की भाषा का अनुकरण इन्होंने अपने ग़ज़लों में किया है। आपात् काल में भी इन्होंने निडरता के साथ अपनी अनुभूति को ग़ज़ल में अभिव्यक्त किया है। एक सच्चे साहित्यकार की तरह उन्होंने अपना उत्तरदायित्व निभाया है।

सुर्यभानू गुप्त ने 1962 में ग़ज़लें लिखना प्रारंभ की। उनकी ग़ज़लों में तीव्रानुभूति, अभिव्यक्ति की सहजता, प्रवाह एवं शिल्प-सौष्ठव दृष्टिगोचर होता है। प्रतिकों एवं बिम्बों के माध्यम से कवि ने आम आदमी की जिन्दगी को अपनी ग़ज़ल के शेरों में अत्यन्त सहजता से परिभाषित किया है। गुप्त के ग़ज़लों में आधुनिक यथार्थ बोध के स्वर मुखरित हुए हैं।

आधुनिक महानगरीय सभ्यता के खोखले आकर्षण का भंडाफोड भी कवि ने अपनी ग़ज़लों के माध्यम से किया है। आधुनिक जीवन में व्याप्त विसंगतियों पर करारा प्रहार करने में भी कवि चुका नहीं है। चारों ओर व्याप्त भ्रष्टाचार, धोखाधडी, छल प्रपंच एवं आचरण के बदलते हुए मूल्यों के संदर्भ में कवि की प्रस्तुत ग़ज़ल उद्धरणीय है।

"देवता नंगे बदन देखे है।
हमने जन्नत के चलन देखे हैं।
फुल खुशबू से मिले सब खाली
खूब नारों के चमन देखे हैं।"[17]

समसामयिक संदर्भों पर भी कवि ने ग़ज़लें लिखी हैं। समय की आवश्यकता को वाणी देना कवि अपना धर्म समझता है। उनकी ग़ज़लों में उर्दू का अतिवादी स्वरूप देखने को मिलता है। उनकी अनेक ग़ज़लें शुद्ध उर्दू की मिलती है। ग़ज़ल के शेरों में तीव्रानुभूति एवं सम्प्रेषणीयता भरने के लिए इन्होंने नये प्रतिकों, अछूते उपमानों एवं बिम्बों का प्रयोग किया है। इनकी ग़ज़लों की शैली अन्य ग़ज़लकारों से अलग है। कथ्य एवं शिल्प की दृष्टि से इनकी ग़ज़लें हिन्दी में नये रंग एवं नये तेवर प्रस्तुत करती है।

3·3·5 चंद्रसेन विराट

सामाजिक यथार्थ के सबसे पहले ग़ज़लकार चंद्रसेन विराट रहे हैं। इनके सात ग़ज़ल संग्रह और दस गीत-संग्रह प्रकाशित हुए हैं। "विराट" की ग़ज़लें इन्सान

और समाज की हकीकत को प्रस्तुत करती है। उन्होंने सामाजिक और वेदनापूर्ण ग़ज़लें पेश की है। हिन्दी ग़ज़ल के पीछे उनका हिन्दीवादी दृष्टिकोन रहा है। इन्होंने प्रेमभावपूर्ण ग़ज़ले लिखी हैं। सामाजिक यथार्थ को ग़ज़लों के माध्यम से सामने रखने में "विराट" का सिद्धहस्त ग़ज़लकार हैं। इन्होंने अपनी ग़ज़लों में आदमी के हर स्थिति का वर्णन किया है इसका उदा·देखिए -

"जिस तरह से गाँव कस्बों पर शहर हावी हुआ,
आदमी पर आदमी का जानवर हावी हुआ।"[18]

प्रेम और यौवन की हर स्थिति का वर्णन इन्होंने ग़ज़लों द्वारा किया है। इतना होते हुए भी इन्होंने नायिका के सौन्दर्य का वर्णन भी किया है। "निर्वसना चाँदनी" और आस्था के अमलतास" में ऐसी ग़ज़लें हैं जो प्रेमभाव को ही व्यक्त करती है। भ्रष्ट जीवन मूल्यों का चित्रण हिन्दी ग़ज़लों में किया है। धार्मिकता, अंधविश्वास पूँजीवादी व्यवस्था आदि की भी उन्होंने व्यंग्यात्मक ग़ज़लें लिखी हैं। विराट की ग़ज़लों में कई शब्दावली का प्रयोग नहीं है।

चंद्रसेन विराट गीतशैली के कोमल एवं रोमानी कवि रहे हैं। विराट की ग़ज़लों में कथ्य के व्यापक आयानी मिलते हैं। प्रेम के अनुठे दर्शन विराट की ग़ज़लों की खासियत है। चंद्रसेन विराट ने वर्णनात्मक पद्धति से ऊपर उठकर वक्रोक्ति एवं सांकेतिकता के सहारे अपनी ग़ज़लों को सामाजिक जनचेतना से जोड़ने का प्रयास किया है। मनुष्य की भावनाएँ विषाक्त होती जा रही है। शोषण एवं स्वार्थपरता की परम्परा बढ़ती जा रही है। ऐसे परिवेश का यथार्थ चित्रण चंद्रसेन विराट ने किया है। इनकी ग़ज़लों में शुद्ध हिन्दी भाषा का प्रयोग हुआ है। ग़ज़लों में उर्दू-फारसी के शब्द आये हैं। इन्होंने ग़ज़लों में अपने ढंग के शिल्प को अपनाया है। कथ्य और शिल्प की दृष्टि से उनका ग़ज़ल काव्य उत्कृष्टतम आदर्श प्रस्तुत करती है। इन्होंने ग़ज़ल को नयी पहचान और अस्मिता भी दी है।

3·3·6 शेरजंग गर्ग

दुष्यन्तकुमार के प्रवर्तित ग़ज़लकारों में शेरजंग गर्ग का नाम आता है। शेरजंग गर्ग ने एक वैज्ञानिक की भाँति तटस्थ रहकर जीवन के अनुभूत सत्यों के आधार पर जो निष्कर्ष निकाले, उन्हें ही ग़ज़ल की विधा में अभिव्यक्ति दी है। उसकी ग़ज़लों का भावपक्ष सर्वहारा वर्ग के अन्तस की प्रतिध्वनि है। उन्होंने आत्मनिरीक्षण शैली को अपनाया है। इसका उदा·-

"खुद से रूठे है हम लोग
टूटे फूटे है हम लोग
सत्य चुराता नज़रे हमसे,
इतने झूठे है हम लोग"[19]

यह ग़ज़ल आधुनिक मानव की परिभाषा लगती है। आम आदमी के दुःख दर्द को उन्होंने अपने ग़ज़लों में उतारा है। आज का मानव जीवन विचित्र बन गया है। उसे जीवित रहने के लिए पग-पग पर सतर्क रहना है। इस संदर्भ को उन्होंने बड़े मार्मिक तरह से ग़ज़लों में व्यक्त किया है। समय के अनुसार जब रूचि बदलती गयी है, परिवेशगत दर्द को अभिव्यक्ति देने में शेरजंग गर्ग अत्यन्त सफल हुए हैं।

शेरजंग गर्ग ने अपने कविधर्म का पूरी सच्चाई एवं ईमानदारी से निर्वाह करते हुए आपात्कालीन व्यवस्था के दुष्परिणामों से आम आदमी को सावधान रहने को सचेत किया है। शेरजंग गर्ग के ग़ज़लों का शिल्प सफल रहा है। उनकी ग़ज़लों की भाषा बोलचाल की भाषा रही है। उनकी ग़ज़लें आधुनिक युगबोध एवं समसामयिक सन्दर्भों की सम्वाहिका है।

3·3·7 डॉ·कुँअर बेचैन

डॉ·कुँअर बेचैन हिन्दी के लोकप्रिय ग़ज़लकार हैं उनके तीन ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। पहला - "शामियाने काँच के", दूसरा - "महावर इन्तजारों का" और तीसरा - "रास्सियाँ पानी की"।

डॉ·बेचैन व्यंग्यपूर्ण ग़ज़ल लिखने में बड़े प्रसिद्ध थे। उन्होंने प्यार की पहेली को अपनी एक ग़ज़ल के द्वारा सुलझाने की कोशिश की है।

"किसी के प्यार की पहली पहेली खुल गई होगी
अकेले में सहेली से सहेली खुल गई होगी।"[20]

डॉ·बेचैन ने दर्द को लेकर भी ग़ज़लें लिखी हैं। इन्होंने अपनी ग़ज़लों में प्रेम के बहाये जानेवाले अश्रुओं एवं हृदय विदारक आहो की कथ्य बनाने के बजाय पेट की उस अग्नि को कथ्य बनाया है।

वास्तव में दर्द ही जीवन की सच्ची पहचान है और इसी दर्द की अभिव्यक्ति ग़ज़ल की जान हुआ करती है। यह दर्द व्यक्ति का भी होता है और समष्टि का भी। आधुनिक समाज में व्याप्त असमानता, अपराध बोध, शोषण, कुंठा एवं संत्रास से ग्रस्त आदमी की पीड़ा को ग़ज़लों द्वारा मुखरित किया है। कुँअर बेचैन ने सर्वहारा वर्ग को सामाजिक क्रांति के लिए ग़ज़लों द्वारा तैयार किया है। डॉ·बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में बह्र सम्बन्धी नियमों का पालन करने के साथ-साथ रदीफ और काफ़िये की पाबन्दी पर भी विशेष ध्यान दिया है। इनकी ग़ज़लों में उर्दू शब्दावली का प्रयोग मिलता है।

कुल मिलाकर लगता है कि कुँअर बेचैन की ग़ज़लों को नये आयामों की तलाश है। इनकी अभिव्यक्ति और कथ्य नवीन हैं। उसमें सामाजिक चेतना और शोषित मानवता की वह ज्वलनशील प्यास भी है जो नयी सामाजिक क्रांति की भूमिका बन सकती है।

3·3·8 डॉ·रोहिताश्व अस्थाना

आज हिन्दी ग़ज़ल एक स्वतंत्र साहित्य विधा रही है। हिन्दी के तमाम कवि गद्य से ऊबकर कविता या ग़ज़ल की ओर मूड़ गये हैं। आज की ग़ज़ल विधा आनेवाले ग़ज़लकारों के लिए एक नया आकर्षण रहा है। उनमें से नये और आधुनिक ग़ज़लकारों में डॉ·रोहिताश्व अस्थाना का नाम आ जाता है। विभिन्न पत्रिकाओं में उनकी ग़ज़लें प्रकाशित हो गई हैं। उदा·-

"प्यास का पर्याय बनकर रह गयी है जिंदगी
किस तरह असहाय बनकर दह गयी है जिंदगी।"[21]

डॉ॰रोहिताश्व अस्थाना की ग़ज़लें युग सत्य की यथार्थ प्रतिमा कुल सर्वहारा वर्ग की पीड़ा को उजागर किये बिना रह न सकेगी। उदा॰-

"सड़कें वही हैं और मकानात वहीं हैं।
मेरे शहर में आज भी हालात वही हैं।"[22]

निष्कर्ष

हिन्दी ग़ज़ल साहित्य में दुष्यन्तकुमार केंद्रबिंदु रहे हैं। जिनकी ग़ज़लों पर हिन्दी ग़ज़लों की बुनियाद खडी है। दुष्यन्तकुमार से अधुनातन ग़ज़ल का वास्तविक विकास माना जा सकता है। प्राचीन युग में ग़ज़ल का विकास पूरी तरह सदृढ़ दिखायी देता है। प्राचीन ग़ज़लकारों ने अपने युग में अपना अपना उत्तरदायित्व निभाया है। यह हिन्दी ग़ज़ल का प्रारम्भिक रूप रहा है। इस रूप से ही आनेवाले आधुनिक ग़ज़लकारों को एक नई दिशा मिली है। इस युग की ग़ज़लों में ज्यादातर बोली भाषा का प्रयोग ही देखने को मिलता है।

भारतेन्दु ने हिन्दी ग़ज़लों की बुनियाद को और भी मजबूत किया है। इन कवियों पर उर्दू ग़ज़लों का प्रभाव अधिक मात्रा में पड़ा है। इस युग की ग़ज़लें आम आदमी के लिए रही है। तमाम कवियोंने अपनी ग़ज़लों के जरिए सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत किया है। आधुनिक कवियों ने आधुनिक परिवेश को अपनी ग़ज़लों में प्रधानता दी है।

इस तरह आज की ग़ज़ल जीवन की विसंगतियों, जीवन की विवशताएँ, टूटे सपनों, दुःख दर्द, आशा-निराशा आम आदमी की समस्याएँ आदि बातों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत कर रही है। आज की हिन्दी ग़ज़ल में कहीं परिवर्तन की आहट महसूस होती है तो कहीं जीने की लम्बी लड़ाई के दर्शन भी होते हैं।

अत्याधुनिक काल के हिन्दी ग़ज़लकारों की सूची अत्यधिक लम्बी है, जिनमें से कुछ तो समय के समर्थ हस्ताक्षर बन चुके हैं और कुछ ग़ज़ल को सजाने सँवारने का अभ्यास कर रहे हैं। निस्संदेह हिन्दी ग़ज़ल का भविष्य उज्ज्वल और संभावनाओं से परिपूर्ण है।

इस तरह अमीर खुसरों से लेकर रोहिताश्व अस्थाना तक ग़ज़ल विधा का विकास होता रहा है, और होताही रहेगा। लोगों की उत्सुकता बढ़ती ही रहेंगी जब तक मानव जीवन रहेगा तब तक यह विधा फलती-फूलती रहेगी। अनेक ग़ज़लकारों

को एक कटु सत्यों का सामना करना पड़ा है परंतु वह उससे सही रास्ता निकाल चुके हैं। आज तो ग़ज़ल विधा की ओर सभी लोगों का दिशा निर्देश हो रहा है। आगे भी उसका भविष्य उज्ज्वल रहेगा।

संदर्भ

1· अमीर खुसरो और उनकी हिन्दी रचनाएँ - डॉ·भोलानाथ तिवारी, प्रभात प्रकाशन, प्रथम सं· पृ·122

2· शामियाने काँच के - कुँअर बेचैन, पृ·19

3· ग़ज़ल एक यात्रा - सूर्यप्रकाश शर्मा, विश्वभारती प्र·, प्रथम सं·, पृ·34

4· शामियाने काँच के - डॉ·कुँअर बेचैन, पृ·20

5· हिन्दी ग़ज़ल उद्भव और विकास - डॉ·रोहिताश्व अस्थाना, सामईक प्रकाशन, प्रथम सं· पृ·177

6· भारतेन्दु ग्रथावली भाग-2 - सं·ब्रजरत्नदास, पृ·422

7· हमारे प्रतिनिधि कवि - विश्वम्भर मानव, पृ·262

8· कानन कुसुम - जयशंकर प्रसाद, पृ·7

9· आजकल, मई 1981 - गोपालकृष्ण कौल, पृ·19

10· उत्तर प्रदेश पत्रिका, फरवरी-मार्च 1977, पृ·41

11· आधुनिक हिन्दी कविता में उर्दू के तत्व - डॉ·नरेश, पृ·99

12· शमशेर की कविता - डॉ·नरेन्द्र वसिष्ठ, पृ·61

13· साये में धूप - दुष्यन्तकुमार, राधाकृष्ण प्र·, द्वितीय सं· पृ·13

14· हिन्दी ग़ज़ल उद्भव और विकास - डॉ·रोहिताश्व अस्थाना, सामईक प्र·, प्रथम सं· पृ·208

15· चक्रवात मानवम्बर 1983 - निरंकारदेव सेवक, पृ·3

16· ग़ज़ल एक अध्ययन - चानन गोविंद पुरी, सीमांत प्र·, 1991, पृ·70

17· दैनिक जागरण - गणतंत्र दिवस विशेषांक 1983 - सुर्यभानू गुप्त, पृ·1

18· हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ ग़ज़लें - डॉ·गिरिराजशरण अग्रवाल, डायमंड प्र·, पृ·69

19· साप्ताहिक हिन्दुस्तान - शेरजंग गर्ग, पृ·15

20· महावर इंतजारों का - डॉ·कुँअर बेचैन, प्रगति प्र·, प्रथम सं· ,पृ·44

21· प्रश्नोत्तरी से - डॉ·रोहिताश्व अस्थाना

22· मानवी (दिसम्बर 1983) - डॉ·रोहिताश्व अस्थाना, पृ·34